International Journal of Sanskrit Research 2017; 3(6): 225-229

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2017; 3(6): 225-229
© 2017 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 10-09-2017
Accepted: 11-10-2017

शुभश्री सेनगुप्ता
M.A in Sanskrit,
Vidyasagar University,
West Bengal, India

Correspondence
शुभश्री सेनगुप्ता
M.A in Sanskrit,
Vidyasagar University,
West Bengal, India

संस्कृत की महिमा

शुभश्री सेनगुप्ता

सारांश
यदि हम संस्कृत शब्द को तोड़ते हैं तो यह एक व्याकरणिक विश्लेषण है जो हमें मिलता है – सम्+कृ–क्त। संस्कृत का अर्थ – पुनर्निर्मित किया गया है, यानी सजाया गया है। संस्कृत में बहुत चर्चा का विषय है, यहां तक कि संस्कृत के मूल स्पष्टीकरण व्याख्या के विषय पर भी कुछ पुस्तकों में चर्चा हुई है, लेकिन संस्कृत की महिमा का अध्ययन शायद ही कभी चर्चा क्षेत्र में प्रस्तुत किया जाता है। संस्कृत को जानने पर सभी अंधविश्वासों और पक्षपात का नाश होता है। यह एक अमीर भाषा है। संस्कृत में धर्म, दर्शन, साहित्य, विज्ञान–केंद्रित विभिन्न विषयों के ज्ञान लेकर इसे जीवन में लागू करने से मानव जीवन की जटिल और कठिन समस्याओं का समाधान करना संभव है।

कुट शब्दः संस्कृत, पुस्तकों, समाधान

प्रस्तावना
संस्कृत एक ऐसा विषय है जो सिर्फ एक जाती और उपजाति की भाषा नहीं है बल्कि सम्पूर्ण आधार की अवधारणात्मक ज्ञान को दर्शाता है। जिसके द्वारा सम्पूर्ण रूप से मानव की अनुभूति संशोधित, विशुद्ध बनता है। इसमें परम सत्य और जानकारी का ज्ञान है, सम्पूर्ण साहित्य विषय का ज्ञान जो सिर्फ गद्य और काव्य में सीमाबद्ध नहीं है। और है पूरे ऐतिहासिक पृष्ठभूमि सम्पूर्ण राजनीति का दृष्टांत स्वरूप 'मनुसंहिता', दर्शन जिसके स्त्रोत 'वेदान्तसार' अर्थात उपनिषद, विचार व्यवस्था अर्थात कानून जिसके दृष्टांत स्वरूप मिलते है 'याज्ञबल्क्य संहिता', चिकित्सा व्यवस्था जिसके दृष्टांत स्वरूप 'आयुर्वेद शास्त्र', 'चरक संहिता', 'सुश्रुत संहिता', भारत का विभिन्न भौगोलिक स्थिति/अवस्थाओं का वर्णन के दृष्टांत के रूप में पाया जाता है – महाकवि कालिदास का 'मेघदूतम' काव्य में उनके सुचारू हाथ से रचित दक्षिण का रामगिरि से उत्तर का हिमालय पर्वत तक का वर्णन, नद–नदी का वर्णन जो पाठक समाज को सुन्दर रूप में भारतीय मानचित्र उपहार दिया है। वैज्ञानिक दृष्टि भंगी का परिचय मिलता है महाकवि कालिदास के ही सुन्दर रूप से नियोजित 'अभिज्ञानशाकुंतलम' – में राजा दुष्यंत के यात्रा पथ में राजा की ही दृष्टि द्वारा कवि पदार्थ विद्या का बोध कराया है, महाकवि भट्टी 'भट्टिकाव्यम' महाकाव्य का द्वितीय सर्ग में श्रीरामचंद्र के यात्रा पथ में प्राकृतिक सुंदरता का वर्णन किया है। कहानीकार के द्वारा निर्मित समस्त कहानियाँ मिलानंतक है जो संस्कृत साहित्य जगत का एक परम प्राप्ति। इसके अलावा है अर्थशास्त्र जिसका दृष्टान्त आचार्य कौटिल्य द्वारा लिपिबद्ध ग्रंथ, शिल्प की एकीकृत दृष्टि भंगी जैसे कि – चित्रकला, नाट्य शास्त्र, नृत्य शिव–पार्वती के लास्य और तांडव के सुन्दर वर्णन, गीत विषयक वर्णन अर्थात सात सुरों के उत्पत्ति, विभिन्न वाद्य यंत्र और उसके उपयोगिता जैसे – शंख, घंटा, डमरू के महत्व, डमरू का नाद से माहेश्वर सूत्र की उत्पत्ति, व्याकरण शास्त्र में विभिन्न सूत्र एकीकृत ज्ञान, धर्म–अर्थ–नीतिशास्त्र, ऋषि वात्स्यायन द्वारा रचित कामशास्त्र, व्याकरण शास्त्र की विस्तृत चर्चा जैसे ऋषि पतंजलि का महाभाष्यं, पाणिनि व्याकरण। इसमें हैं तीर्थ क्षेत्र की यात्रा, मंदिर दर्शन का ज्ञान जो ज्ञान प्राप्त करने पर मनुष्य अपने मान में ही समग्र विश्व का दर्शन कर पाते हैं।

विचार–विमर्श
संस्कृत में भाषा शास्त्र
संस्कृत सम्पूर्ण भाषाओं की जननी है। संस्कृत को दव भाषा भी कहते हैं। वैदिक युग में विभिन्न शाखाओं के प्रसारण होते हुए स्पष्ट रूप में दिखाई गई है वेद से उत्पत्ति वेदांग में। वेद पाठ का सहायक ग्रंथ है वेदांग। छः वेदांग हैं – शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष। छः वेदांग में से भाषा विज्ञान से सम्बंधित शिक्षा, व्याकरण, निरुक्त, छन्द।

वैदिक युग में मनुष्यों की मुख्य भाषा थी संस्कृत। धीरे–धीरे करके यह भाषा आर्य जाति की भाषा हो गई। यद्यपि आर्य एक जाति प्रतीत होता है, आर्य का रहस्यमय अर्थ सज्जन है।

संस्कृत में वेद चर्चा

वैदिक युग संस्कृत के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण समय है। संस्कृत के क्षेत्र में वेद इतना महत्वपूर्ण है कारण वेद का अर्थ है ज्ञान। ज्ञान का अर्थ यहां पर परम ज्ञान निर्देशित हुआ है। वेद का सम्पूर्ण वर्णन विषय को देखकर वेद को श्रुति आख्या दिया गया है। श्रुति अर्थात सुनना। गुरु–शिष्य परंपरा में ये विद्या दान और ग्रहण के रीति प्रचलित थी, सुनकर ये विद्या याद रखने पड़ते थे। मानव जीवन में ज्ञान लाभ के लिए एक उपयुक्त उपाय है सुनना। मन के साथ कुछ भी मत सुनो तो समझना संभव नहीं है। अर्थात उपयुक्त अर्थबाहि शब्द प्रयोग करने के लिए प्रयोगात्मक शब्दों को पहले समझना होगा। इसलिये वैज्ञानिक तरीके से वेद के माध्यम से श्रवण की ये प्रक्रिया अत्यन्त कार्यकारी है। इसलिए, संस्कृत की महिमा वर्णन करने के लिए पहले ही वेद उज्ज्वल रूप से रोशन होता है। वेद में यज्ञ कार्य की प्रधानता दर्शित होती है।

यज्ञ के कार्य में होता – आहुति नेता

प्रधान – यजमान

वेद के कर्म के विषय में विस्तृत आलोचना है, इसलिए वेद को कर्मकाण्ड बोला जाता है।

संस्कृत में वेद से उत्पन्न वेदांग के विषय में समंक धरना

अंगों के साथ जैसे अंगी की पूर्णता है, वैसे ही वेदांग के साथ ही वेद पूर्णता प्राप्त करते हैं। छः वेदांग वेद के विभिन्न क्षेत्रों की सहायक है। जैसे वेद पढ़ने के लिए शिक्षा और छंद, व्याकरण और निरुक्त वेदो के अर्थ के लिए सहायक, वैदिक कर्म अनुष्ठान के क्षेत्र का सहायक है ज्योतिष और कल्प शास्त्र। पाणिनीय शास्त्र में वेद को पुरुष रूप में कल्पना किया गया है और इस छः वेदांग उस पुरुष का ही विभिन्न अंगरूप में वर्णित हुआ है। इस विषय को केंद्र करके श्लोकाकार में ये रुपायित हुआ है –

''छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोथ पठ्यते।
ज्योतिषामयनं चक्षुनिरुक्तो श्रोत्रमुच्यते।।
शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतं।
तस्मात् संगमधीत्यैब ब्रह्मलोके महीयते।।''

इसके अर्थ है वेदरूपी पुरूष का पादद्वय है छंद, हस्तद्वय है कल्प, चक्षु है ज्योतिष, कर्णस्वरूप है निरुक्त, शिक्षा उसका घ्राण, व्याकरण है मुखस्वरूप।

शिक्षा – वर्ण का उच्चारण

कल्प – यज्ञ विधि का वर्णन

निरुक्त – वैदिक शब्दों के अर्थ प्रकाशक ग्रंथ

व्याकरण – सही शब्द प्रयोग और अपशब्द का वर्जन के लिये ये ज्ञान आवश्यक

छंद – वेदमंत्र उच्चारण के सहायक

ज्योतिष – वैदिककाल निर्धारण में / निरूपण के सहायक

संस्कृत में धर्म का स्थान

संस्कृत में धर्म का स्थान जिस रूप में महत्वपूर्ण होकर प्रस्फुटन हुआ है इस विषय में एक संक्षिप्त आलोचना अवलोकन किया है – धर्म शब्द का अर्थ धारण करना, अपनी स्थिति में मजबूती से रहना। धर्म है नियम, विधि–व्यवस्था आदि। वर्तमान समय में जिसको कानून कहा जाता है, प्राचीनकाल में इसी को ही धर्म कहा जाता था। मानव के कल्याण के लिए जरूरत है धर्म, दर्शन और वैज्ञानिक विचार। आइन्स्टाइन की उक्ति –

'धर्म बिना विज्ञान अपूर्ण, विज्ञान बिना धर्म अंधा'।

अर्थात धर्म और विज्ञान एक दूसरे के पूरक हैं।

संस्कृत में दर्शन का स्थान

दर्शन शब्द का शाब्दिक अर्थ है – देखना या प्रत्यक्ष करना। संस्कृत में से दर्शन का अर्थ है जिसके द्वारा ज्ञान अर्जित होता है। बुद्धि वृत्ति सम्पन्न मानव का कौतुहल प्रवणता में विश्व ब्रह्माण्ड विषय में विभिन्न प्रश्न जागृत होता है और उस प्रश्न का उत्तर का अनुसंधान करके एक विशाल दर्शन शास्त्र का उद्भव हुआ है। वैदिक युग में जो दर्शन का सूत्रपात हुआ है आरण्यक साहित्य में वो विकसित होकर परिपूर्णता लाभ करता है। दर्शन शास्त्र में आकृष्ट विभिन्न ऋषियों के द्वारा विभिन्न प्रश्नों के समाधान में मानव के प्रति उपदेशमूलक वाणी का प्रचार हुआ है जैसे– 'आत्मानं विद्धि' अर्थात आत्मा को जानना, 'तेन त्यक्तेन भुंजीथाः' अर्थात पार्थिव नश्वर वस्तु का त्याग द्वारा ही आत्मा का यथार्थ उपलब्धि सम्भव है। आत्मा अर्थात ब्रह्म का स्वरुपत्व उपलब्धि से ही प्रकृत आनंद है। उपनिषद से अनुप्रेरित वेदान्त दर्शन इस सूत्र में प्लेटो का उक्ति– 'उपनिषद एक महासंगीत'। अल्बर्ट आइन्स्टाइन का उक्ति 'दर्शन ही वैज्ञानिक गवेषणाओं की प्रेरणा है'। विशेष रूप से ध्यान दें –

मानव जीवन में समस्याओं के समाधान में दो दिशा की आवश्यकता है

1. दार्शनिक दृष्टिकोण और
2. विज्ञान

दर्शन का इतिहास में आचार्य शंकर का अपरिसीम अवदान अविस्मरणीय है। उन्होंने भारतीयों को आध्यात्मिक और नैतिकता का पथ दिखाया है दर्शन के माध्यम से। पक्षपात के दुष्चक्र से मुक्त करके आत्मविश्वास के पथ पर चलना सिखाया है। उन्होंने मानव के अंदर में ईश्वरत्व का जो स्थान है उसको खोज दिया है और समत्व भाव जागृत किया है। उनके दर्शन का दर्शित रूप है – आत्म शक्ति ही श्रेष्ठतम लाभ का उपाय है। आधुनिक कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर दार्शनिक चिंतन शक्ति के माध्यम से ही विश्व कवि का आसन लाभ किया है। दार्शनिक स्वतंत्र विचारधारा के सूत्र में दर्शन में दो पक्ष का सृष्टि हुआ है – आस्तिक दर्शन और नास्तिक दर्शन। नास्तिक शब्द मूल रूप से आस्तिक शब्द से ही आया है। आस्तिक दार्शनिक जो वेद में विश्वास करता है और व्यक्ति के साथ–साथ वो परे को भी मानते हैं। जैसे – मीमांसा, वेदांत, सांख्य, योग, न्याय और वैशेषिक। और जो नास्तिक दार्शनिक है उनको वेद का प्रमाण में विश्वास नहीं है जैसे – चार्वाक, बौद्ध और जैन। इसके अलावा कालक्रम में दर्शन में स्वतंत्र मतभेद के लिए विभिन्न नाम पर विभिन्न शाखाओं की उत्पत्ति हुई है भारतीय दर्शन, पश्चिमी दर्शन इस तरह से। भारतीय दर्शन में चार सोच के कदम मिलते हैं –

वेद का संहिता भाग में – बहुदेव वाद

उपनिषद भाग में – सर्वेश्वर वाद

छः दर्शनों का युग में – ज्ञानमार्ग में मुक्ति वाद

पुराण का युग में – व्यक्ति रूप में ईश्वर को आधार करके भक्ति वाद

उपनिषद संस्कृत को समृद्ध किया है

उपनिषद शब्द का व्याकरणगत विश्लेषण है – उप+नि+सद्–क्विप्।

उपनिषद का अर्थ है ब्रह्मविद्या। उपनिषद के प्रधान आलोचना का विषय है ब्रह्म और आत्मा। वेद में ही पहली बार ब्रह्मविद्या प्रकाशित हुआ है। समग्र उपनिषद से ब्रह्म के दो रूप मिलते हैं –

मूर्त और अमूर्त रूप

पृथ्वी और अमृत

स्थितिशील और गतिशील

सत् (व्यक्त) और तत् (अव्यक्त)

अमूर्त रूप अवस्था में ब्रह्म अशब्द, अस्पर्श, अरूप, अव्यय, अजर, अमर, नित्य, स्वादहीन, गंधहीन।
ब्रह्म को सही तरह से जानकर सम्पूर्ण एकाग्रचित होकर भक्ति रस द्वारा उनको जो रूप दिया जाता है वो है मूर्त रूप। उपनिषद के और एक मूल विषय है आत्मा। आत्मा शब्द के अर्थ है सर्वगत या सर्वव्यापी। आत्मा ब्रह्म स्वरूप। ब्रह्मतत्व या आत्मतत्व ही है उपनिषद के मूल विषय। पूरे वेदों की कर्मकांड का ज्ञान पूरी तरह से विस्तार से चर्चा की गई है इसलिए उपनिषद को ज्ञानकांड बोला जाता है।

संस्कृत जगत में साहित्य का समृद्ध उपहार

शब्द और अर्थ के मिलने से प्रकट हुआ विद्या है साहित्य विद्या। अर्थात साहित्य शब्द का अर्थ है मिलन। संस्कृत साहित्य जगत में महाकवि कालिदास का स्थान असामान्य है। जैसे एक मालाकार ने अपने तटस्थ हाथों से एक सुंदर हार का निर्माण करता है वैसे ही उन्होंने अपनी प्रतिभा शक्ति से अमर साहित्य का निर्माण किया है। उन्होंने साहित्य समाज को जो बेहतरीन उपहार दिया है उनमे से ऐसे ही कुछ उदाहरण है – मेघदूतम, अभिज्ञान शकुन्तलम, कुमारसंभवम् आदि काव्य। संस्कृत साहित्य जगत में बाणभट्ट की असामान्य भूमिका है। उनकी दो श्रेष्ठ रचना है 'हर्षचरित' और 'कादम्बरी कथामुखम'। गद्य रचना कवि प्रतिभा में श्रेष्ठता की मापदंड है। इसीलिए गद्य साहित्य में ये श्लोक ध्यान देने योग्य है – ''गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति''।
दण्डी–सुबन्धु–बाणभट्ट गद्य साहित्य का क्षेत्र में ये त्रयी के अवदान एक स्वर्ण युग है। महाकवि भारवी रचित 'किरातार्जुनीयम्' एक अनवद्य उपहार, महाकवि भास रचित 'स्वप्नबासबदत्तम', शूद्रक रचित 'मृच्छकटिक', बिशाखदत्त रचित 'मुद्राराक्षसम' आदि रचना हमारे निकट मानव जीवन के यात्रा पथ का नियम और उद्देश्य प्रतिफलित हुआ है लेखकों के असामान्य चिन्ताधारा के शक्ति से लेखनी द्वारा। संस्कृत साहित्य में विष्णु शर्मा रचित 'पंचतंत्र' कहानी ग्रंथ प्राचीन होकर भी एक अनन्य समृद्धशील उपादान है। इसके अलावा गुणाढ्य रचित 'बृहत कथा' जिसका संक्षिप्तसारबाद में 'कथासरितसागर' नाम से ख्यातिलाभ किया है। संस्कृत–साहित्य रस, अलंकार, ध्वनि द्वारा सुसज्जित है। काव्य में अलंकार अनवद्य रूप से खिला है। संस्कृत साहित्य जगत में आचार्य भामह वक्रोक्ति अलंकार को समस्त अलंकारों का मूल रूप में स्वीकारा है। उनके मत से अलंकार विषय में उक्ति है –
''न कान्तमपि निर्भूषं विभाति वनितानन्म''।
अर्थात अलंकार के बिना बोनिता–बदन जैसे सुंदर नहीं होता, वैसे ही अलंकार के योजना के बिना काव्य भी सुन्दर नहीं हो सकता।
संस्कृत साहित्य नवरस द्वारा सम्पृक्त है –
श्रृंगार, हास्य, करूँ, रौद्र, वीर, भयानक, वीभत्स, अद्भुत ये 8 रस प्रधान है अवशेष में शांत रस को नवम रस के रूप में मर्यादा दिया गया है।

संस्कृत में नाट्य साहित्य का अवदान

नाट्य के सुप्तावस्था का जागरण हुआ है वेद के कर्मकांड में। संस्कृत नाट्य साहित्य का उत्पत्तिकाल को लेकर विभिन्न मतभेद देखा गया है। महामुनि भारत निर्मित 'नाट्यशास्त्र' नाट्य जगत में प्रसिद्ध ग्रंथ है। भारत के अनुसार ब्रह्मा सर्वसाधारण के लिए ललित कला एकीकृत नाट्यशास्त्र सृष्टि किए है जो पांचवा वेद के रूप में प्रसिद्ध हुआ है। भारत का प्रथम उपहार है 'अमृत मंथन' और 'त्रिपुरदाह' नाम का दो नाटक। क्रमानुसार समाज का विभिन्न पहलुओं को नाटक में प्रस्तुत किया गया है। नाटक है ऐसी एक विश्राम के माध्यम जो सिर्फ मनोरंजन के लिए ही नहीं संदेश देने का भी एक महत्वपूर्ण कार्य है। संस्कृत–नाटक को दो भागों में विभाजित किया गया है– दृश्य काव्य और श्रव्य काव्य के रूप में।

विश्व का 4 महाकाव्य में से संस्कृत भाषा में रचित रामायण और महाभारत के स्थान असामान्य रूप में और अलंकृत रूप में देखा जाता है।

रामायण

संस्कृत में रचित महाकाव्य में सार्वजनीन स्वीकृत और अनुसरणियो महाकाव्य है 'रामायण'। इस महाकाव्य को लेके ये मत है कि द्वितीय से षष्ठ अध्याय महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित, प्रथम और सप्तम अध्याय चारण कवियों के द्वारा परवर्तीकाल में संयुक्त हुआ है। सम्पूर्ण रूप से रामायण सात कांड में रचित और 24000 श्लोक में वर्णित महाकाव्य है। इस महाकाव्य का प्रधान चरित्र अर्थात नायक है दशरथ पुत्र श्रीरामचन्द्र। रामायण का सात कांड के नाम– बाल कांड, अयोध्या कांड, अरण्य कांड, सुन्दर कांड, युद्ध कांड और उत्तर कांड। रामायण वास्तव में मनुष्य का उत्तम चरित्र का वर्णन करते हैं, ऐसे चरित्र जो समाज के लिए अनुसरणीय है। कर्तव्यों पर चर्चा करते है जैसे – संतान का माता–पिता के प्रति कर्तव्य, माता–पिता का संतान के प्रति दायित्व, भाई–बहन का रिश्ता कैसा होना चाहिए, भक्त के साथ भगवान का संपर्क कैसा होना चाहिए, पति का पत्नी के प्रति कर्तव्य और पत्नी का पति के प्रति निष्ठा, पुत्र तुल्य प्रजा के प्रति पितृ तुल्य राजा का कर्तव्य के विषय में बात करते हैं। अर्थात मनुष्य से देवता होने का आदर्श यात्रापथ, समाज में नारी का सम्मान समाज संस्करण का उल्लेखनीय दिशा है जो इस कहानी से जाना जाता है।

महाभारत

संस्कृत में 'महाभारत' एक समृद्धशाली महाकाव्य है जो सर्वजन स्वीकार किया है। ये महाकाव्य का वक्ता है महर्षि वेदव्यास और लेखक है महादेव पुत्र पार्वती नंदन श्री श्री गणेश। ये काव्य 18 पर्व और 36000 श्लोक में रचित है। ये महाकाव्य में शिष्य के प्रति गुरु का दायित्व, सच्चा मित्र के कर्तव्य, युद्ध विद्या, धर्म, कर्म, ज्ञान, भक्ति आदि लेके क्या करना है और क्या नहीं करना विषय है उस को लेकर रचित श्रीमद्भगवद्गीता वर्णित हुआ है। श्रीमद्भगवद्गीता ही इस महाकाव्य का मूल सार है।

संस्कृत में पुराण का स्थान

लगभग 2000 साल पहले पुराण एकीकृत ज्ञान सब को उपहार मिली जिसका फल स्वरूप संस्कृत में निरंतर आधुनिकता का स्पर्श उपलब्ध होता है। पुराण शब्द का अर्थ है प्राचीन काल का कहानी अनुसार से रचित उत्पत्ति, प्रलय, रीति, नीति, आचार, आचरणगत विस्तार ज्ञान में सुसज्जित साहित्य ग्रंथ। भारत के इतिहास को जानने के लिए पुराण की ओर देखना ही होगा। धर्म, संस्कृति, देव–देवी, व्यक्ति जीवन, ऋषि और विभिन्न कहानी लेकर पुराण समृद्ध है। इस प्रकार 18 महापुराण और उपपुराण है।

संस्कृत में इतिहास का स्थान

इतिहास शब्द का अर्थ 'इति–ह आस' अर्थात ऐसा ही था। संस्कृत में इतिहास अनेक विषय को केंद्रित करके निर्मित हुआ है, जैसे वीरता का कहानी अनुसार से, साहित्यगत दिशा से, स्थापत्य, शिल्पकला आदि विषय अवलम्बन करके। एक शब्द में कहा जाए तो संस्कृत साहित्यगत दिशा से खुद ही एक समृद्धशाली इतिहास तैयार किया है।

संस्कृत में एक प्रसिद्ध मूलक पहलू है चिकित्सा शास्त्र

पहली बार चिकित्सा शास्त्र रचित हुआ ब्रह्मा द्वारा ''ब्रह्म संहिता'' और ''आयुर्वेद शास्त्र'' के नाम से। 8 अंग अथवा तंत्र से विभक्त आयुर्वेद को अष्टांग आयुर्वेद बोला जाता है। आयुर्वेद के स्त्रोत है वेद। आयुर्वेद में चिकित्सा विषयक जो मंत्र का उल्लेख है जैसे – भैषज्य मंत्र, आयुष्य मंत्र और पौष्टिक मंत्र आदि मंत्रो आयुर्वेद के बीज है। चिकित्सा विज्ञान का प्रतिष्ठाता है महर्षि आत्रेय।

चरक संहिता
इस संहिता का प्रधान वक्ता आत्रेय, रचयिता अग्निवेश। अग्निवेश रचित तंत्र का संस्कारक है चरक। चरक के नामानुसार से ही इस शास्त्र का नाम 'चरक संहिता' हुआ है। ये संहिता 8 भागों में विभाजित है। इस चरक संहिता में ही बोला गया है कि व्याधि के उत्पत्ति का मूल कारण है वायु, पित्त, कफ। उपनिषद में भी बीमारी के लक्षण के विषय पर वर्णन है।

सुश्रुत संहिता
ऋषि धन्वन्तरि के शिष्य सुश्रुत के नामानुसार इस तंत्र का नाम हुआ है। नागार्जुन द्वारा इस ग्रंथ संशोधित होकर 'सुश्रुत संहिता' नाम हुआ है। सुश्रुत शल्य चिकित्सा में विशेष रूप से निपुण थे।

भेल संहिता
महर्षि आत्रेय के सबसे महत्वपूर्ण में से एक शिष्य भेल प्रणीत ये संहिता। चरक संहिता और सुश्रुत संहिता के अनुसार ही ये संहिता रचित हुआ है।

बौद्ध युग में आयुर्वेद चिकित्सा
अहिंसा पंथी बौद्धों के काल में शल्य तंत्र को वर्जित करके रसायन तंत्र द्वारा चिकित्सा व्यवस्था गठित हुआ है। इस तंत्र का मूल विषय है अकाल मृत्यु प्रतिरोध, ज्वर और ब्याधि का विनाश, अकाल बार्धक्य के प्रतिरोध आदि। इस संप्रदाय का ख्यातनामा चिकित्सक है नागार्जुन और जीवक।

संस्कृत में धनुर्वेद संहिता का ज्ञान
इस शास्त्र को प्रथम प्रचार किया है भगवान ब्रह्मा, उनसे ये शिक्षा महादेव लाभ किया है और परवर्ती काल में उन्होंने ये विद्या परशुराम को दान किया है। परशुराम विश्वामित्र को ये विद्या दिया है। दुष्ट का नाश और शिष्ट का रक्षण और प्रजा पालन के लिये ही ये विद्या। धनु सब अस्त्र में से ज्यादा श्रीमय, प्रसिद्ध और तेजस्वी जिसका दृष्टान्त हम सब रामायण, महाभारत, पुराण में पते हैं।

संस्कृत में ज्योतिष शास्त्र का योगदान
संस्कृत में ज्योतिष शास्त्र दिव्य नक्षत्र स्वरुप है। ये एक ज्योतिर्मय शास्त्र है। इस शास्त्र को वेद का चक्षु आख्या दी गई है। ये दार्शनिक, वैज्ञानिक और गाणितिक आधार पर निर्मित कर्मशास्त्र है। इस शास्त्र का योगदान प्रत्येक मनुष्य का जन्म से लेकर मृत्यु तक।

ग्रह, नक्षत्र, राशि, भुलोक का सब कुछ ही एक दूसरे के साथ संबद्ध है। स्थिरता, परिवर्तनशीलता, मानसिक अवस्था, सृष्टि, लय ये समस्त का प्रभाव सबके ऊपर पड़ते हैं। मनुष्य का दोष, गुण, प्रतिकार, समस्या और समाधान ये सब कुछ लेकर ये शास्त्र विचार–विमर्श करते हैं। इस शास्त्र के परिचायक हैं ऋषि पराशर। भारतीय ज्योतिर्वैज्ञानिक रूप में आर्यभट्ट, वराहमिहिर के योगदान ज्योतिषशास्त्र के इतिहास में उज्ज्वल दृष्टान्त है।

संस्कृत में गणित का स्थान
संस्कृत में गणित चर्चा का रूप मिलता है वेद काल से। क्यूंकि वैदिक ऋषियों ने यज्ञ करने के समय यज्ञ निर्माण के लिए ज्यामितिक सिद्धांत का अनुभव किये थे। ज्योतिषियों के ज्योतिर्विज्ञान का विभिन्न समस्या समाधान फलक के ऊपर धूल का प्रसार करके ज्यामितिक अंकन भरते थे।

संस्कृत में वास्तुविद्या
संस्कृत में 'वस्तु' शब्द से ही वास्तव में वास्तु शब्द उत्पन्न हुआ है। जो व्यापक अर्थ में समझाता है भारतीय स्थापत्य विद्या। निवास स्थल, नगर निर्माण परिकल्पना, शिल्प निर्माण, स्थापत्य, मंदिर निर्माण, मूर्ति निर्माण ये सब ही वास्तुविद्या का अंतर्गत है।

संस्कृत में प्रायोगिक विज्ञान
इसमें हैं चौर्य विद्या, रंधनविद्या, हस्तायुर्वेद आदि।

चौर्य विद्या विषयक ग्रंथ है 'षण्मुख कल्प'। इस ग्रंथ का उद्देश्य है चौर्य विषय पर मनुष्यों को सचेतन करना।

रंधन विषयक ग्रंथ है 'नलपाक'। राजा नल के नामानुसार से इस ग्रंथ का नाम है क्यूंकि वो थे अत्यंत निपुण रंधनशिल्पी। और रंधन जो एक शिल्प है वो इस ग्रंथ में वर्णन किया है।

संस्कृत में शिल्पशास्त्र
ये शिल्पकला एकीकृत ज्ञान का आचार्य है भगवान विश्वकर्मा। मिट्टी के शिल्प, मूर्ति निर्माण, अलंकरण, रंगों का मिश्रण, विभिन्न धातु द्वारा नियोजित कला महल निर्माण, रथ निर्माण, वायुयान निर्माण आदि ज्ञान इसी शिल्प शास्त्र से ही प्राप्त किया जाता है।

संस्कृत में चित्रकला
विभिन्न पुराण से जाना जाता है इस विद्या का प्रवर्तक है भगवान श्रीनारायण। विश्वकर्मा के माध्यम से ये कला प्रसार हुआ है। चित्रकला एकीकृत सब ही ज्ञान 'चित्रकला माहात्म्य' ग्रंथ में चर्चा हुई है।

संस्कृत में कामशास्त्र
कामशास्त्र प्रथम रचित और प्रसार हुआ है शिव–शक्ति को केंद्रित करके नंदी के माध्यम से। परवर्ती काल में ऋषि वात्स्यायन 'कामसूत्र ग्रंथ' रचना किया है नये तरह से। इसमें सिर्फ कामविषयक चर्चा ही दर्शित नहीं हुआ है परन्तु उस युग का समाज व्यवस्थाओं का वर्णन है। समाज में स्त्री की विशेष मर्यादा थी और स्वाधीनता थी। स्वामी की अनुमति से स्त्री परिवार निर्देशन का दायित्व ग्रहण करती थी। सिलाई, कपड़े बुनाई आदि विभिन्न क्षेत्रों में नारी की भूमिका दर्शित होती थी। फिर अनेक नारी नर के जैसा संन्यास व्रत ग्रहण करती थी।

निष्कर्ष
संस्कृत मनुष्य के आचार–आचरण का सही मार्गदर्शक है। धर्म, कर्म, ज्ञान का पथ प्रदर्शक है। मनुष्य से देवत्व तथा देवत्व से ईश्वरत्व तथा ईश्वरत्व से परमेश्वरत्व अर्थात परब्रह्म तक की यात्रा है। संस्कृत एक स्वर्ण खचित शास्त्र है। द्वैतवाद से अद्वैतवाद तक पहुँचने की यात्रा पथ है। अनेक से एक में मिलने का पहलू है। एक असामान्य समृद्धशाली शास्त्र।

एक की दृष्टि से अनेक के दर्शन। पूरे विश्व को देखने का, जानने का पहलू है। सत्य का अहसास, शिव का अहसास, सुन्दर का अहसास। परिशुद्ध, विशुद्ध ज्ञान। विभिन्न याग–यज्ञ आदि द्वारा ईश्वर का आमंत्रण। ईश्वर अर्थात वो जो इष्ट साधन करते है उनको मान में, मस्तिष्क में, आचार–आचरण में स्थान देना।

जीवन–मृत्यु की अगली अवस्थाओं का रहस्यभेद दृष्टांत स्वरूप उपनिषद है।

समस्त कृत कृत्य का ज्ञान जिसका दृष्टांत स्वरूप है श्रीमद्भागवत गीता।

जय–पराजय, न्याय, नीति, निर्माण, निष्ठा, निर्णय भित्ति सुअलंकृत शास्त्र है संस्कृत।

उम्मीद है कि संस्कृत के विषय में मेरी यह श्रद्धा का भाव सबका हृदयग्राही हो।

सन्दर्भ ग्रंथ
1. पुस्तक – संस्कृत साहित्य इतिहास
   लेखक – दास देव कुमार

पृष्ठ संख्या : 1, 34, 54, 82, 198, 214, 295, 304–314, 322, 328–339
2. पुस्तक – धर्म–अर्थ–नीतिशास्त्र समीक्षा
   लेखक – बासु सुमिता
3. पुस्तक – वेदान्तसार
   लेखक – पाल बिपदभंजन
   पृष्ठ संख्या : 310, 311
4. पुस्तक – संस्कृत साहित्य इतिहास
5. लेखक – बन्दोपाध्याय धीरेन्द्रनाथ
   पृष्ठ संख्या : 104, 117
6. पुस्तक – उपनिषद